IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हरियाणा राज्य में विश्वविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों का सामाजिक कार्यों में भूमिका – एक विवेचना

महाबीर[1]
शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र))
विक्रम विश्वविद्याल, उज्जैन

डॉ० अनुराधा सुपेकर[2]
पीएच0डी0 (विभागाध्यक्ष)
शोध केन्द्र महाराजा महाविद्यालय
उज्जैन मध्य प्रदेश

सारांशः– भारतीय स्वीधान के द्वारा भी शिष्यों की भागीदारी बराबर की मानी गई है। परन्तु छात्र व छात्राओं दोनों समर्द्ध की सामाजिक भागीदारी सामान्य स्तर की पाई गई इसलिए उन्हें और ज्यादा प्रेरणा व उत्साह के साथ समाज में अपनी भूमिका को सिद्ध करना होगा। इसके लिए उनके अभिभावकों व अध्यापको को महत्वपूर्ण कदम उठाने की आवश्यकता है। निष्कर्ष में पाया गया कि छात्रों का राजनैतिक स्तर सामान्य स्तर का है। तथा उन्हें और अधिक राजनैतिक कार्यो में भूमिका की आवष्यकता है। निष्कर्ष में पाया गया कि राजनैतिक कार्यो में छात्राओं की भूमिका सामान्य स्तर की है। जो कि छात्रों की तुलना में बहुत कम है। और उन्हें राजनैतिक कार्यो में भागीदारी की अधिक आवश्यकता है।

प्रमुख शब्द :– विश्वविद्यालय स्तर के विद्यार्थी, सामाजिक कार्य।

परिचय :–

शिक्षा मानव जीवन का आधार स्तम्भ है, इसके अभाव में मानव जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। यह मानव जीवन की सर्वोपरि एवं उच्चता का प्रतीक है। पुरातन काल से ही शिक्षा को आत्मज्ञान एवं आत्मप्रकाश का साधन माना गया है, संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि शिक्षा मानव जीवन का आधार है। वर्तमान में शिक्षा जहां एक तरफ बालकों का सर्वांगीण विकास कर उन्हें विद्वान, चरित्रवान और बुद्धिमानी बनाती है। समाज के विकास के लिये एक अनिवार्य एवं शक्तिशाली साधन है।

बालक के व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन करने के लिए व्यवस्थित शिक्षा की परम आवश्यकता है शिक्षा माता के समान पालन–पोषण करती है तथा पत्नी के भांति संसारिक चिन्ताओं को दूर करके प्रसन्नता प्रदान करती है। शिक्षा हमारी समस्याओं को सूलझाती है एवं हमारे जीवन को सुसंस्कृत बनाती है। जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश पाकर कमल का फूल खिल उठता है ठीक उसी प्रकार शिक्षा को पाकर प्रत्येक विद्यार्थी कमल के फूल की भांति खिल उठता है तथा अशिक्षित रहने पर दरिदृष्ता, शौक एवं कष्ट के अंधकार में डूब जाता है।

संक्षेप में शिक्षा वह प्रकाश है जिसके द्वारा बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा अध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। इससे वह समाज का एक उत्तरदायी घटक एवं राष्ट्र का प्रखर चरित्र सम्पन्न नागरिक बनकर समाज की सर्वागीण उन्नति में अपनी शक्ति का समुचित प्रयोग करने की भावना से ओत–प्रोत होकर सांस्कृतिक एवं सभ्यता को पुर्नजीवित एवं पुर्नस्थापित करने के लिए प्रेरित हो जाता है।

भारत में उच्च शिक्षा का विकास –

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पहला आयोग 'विश्व विद्यालय शिक्षा आयोग' (राधा कृष्णन् आयोग) गठित हुआ। इस आयोग ने उच्च शिक्षा के सभी पहलुओं पर गम्भीरता से विचार किया और सुधार हेतु अनेक सुझाव दिए। इन सुझावों के आधार पर उच्च शिक्षा में सुधार की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। सरकार ने 1953 में विश्वविद्यालय अनुदान समिति को 'विश्व विद्यालय अनुदान आयोग' के रूप में समुन्नत किया।

वर्ष 1954 में 'ग्रामीण उच्च शिक्षा समिति' का गठन किया गया। इस योजना के दौरान कई नए विश्वविद्यालयों और कई कृषि, वाणिज्य, इन्जीनियरिंग, विधि और शिक्षक शिक्षा के स्वतंत्र महाविद्यालयों की स्थापना की गई। 1956 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) को सवैधानिक दर्जा दिया गया जिससे उसके अधिकार और बढ़ गए। इसके अलावा दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में 1985 में दिल्ली में 'इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNU) की स्थापना की गई और दूर शिक्षा कार्यक्रमों का विकास किया। 11वीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है।

शिक्षा व समाज –

बालक जन्म के समय कोरा पशु होता है। जैसे–जैसे वह समाज के अन्य व्यक्तियों व सामाजिक संस्थाओं के सम्पर्क में आकार विभिन्न प्रकार की सामाजिक क्रियाओं में भाग लेता है। वैसे–वैसे वह पााशविक प्रवृतियों पर नियंत्रण करते हुए सामाजिक आदर्शों तथा मूल्यों को सीखता है। इस प्रकार बालक के सामाजिकरण की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। इसमें विभिन्न तत्वों का योगदान रहता है, जो बालक के सामाजिकरण को प्रभावित करते है। ये तत्व निम्न प्रकार से हैं –

1. **परिवार** :– बालक के सामाजिकरण के विभिन्न तत्वों में से परिवार का प्रमुख स्थान है।
2. **पड़ोस** :– बालक के सामाजिकरण को प्रभावित करने वाला एक तत्व उसका पड़ोस भी है।
3. **स्कूल** :– परिवार तथा पडोस के पश्चात् स्कूल एक ऐसा स्थान है जहां पर सामाजिकरण होता है।
4. **समुदाय तथा समाज** :– बालक के सामाजिकरण व समाज की महत्वपूर्ण भूमिका है।

समस्या की आवश्यकता –

अनुसंधानकर्ता ने हरियाणा राज्य में विश्वविद्यालय स्तर पर छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक कार्यो में बढ़ती भागेदारी को मद्देनजर रखते हुए तथा हरियाणा राज्य में बढ़ती हुई सामाजिक बुराइयों, भ्रुण हत्या, दहेज प्रथा, लिंगानुपात और पर्यावरण से सम्बन्धित अनेक समस्याओं को देखते हुये एवं उनकी सामाजिक कार्यों में रूचि एवं अभिरूचि को जानने के लिए अनुसंधानकर्ता ने हरियाणा राज्य के विश्वविद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों का सामाजिक कार्यो में भूमिका का अध्ययन विषयक विवेचना का चुनाव किया।

अध्ययन के उद्देश्य –

1. हरियाणा राज्य के विश्वविद्यालय स्तर के छात्रों का सामाजिक कार्यो में भूमिका का अध्ययन।
2. हरियाणा राज्य के विश्वविद्यालय स्तर की छात्राओं का सामाजिक कार्यो में भूमिका का अध्ययन।
3. हरियाणा राज्य के विश्वविद्यालय स्तर के छात्रों का व छात्राओं का सामाजिक कार्यो में तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना –

1- हरियाणा राज्य के विश्वविद्यालय स्तर के छात्रों व छात्राओं का सामाजिक कार्यो में भूमिका में कोई सार्थक अन्तर नहीं।

अध्ययन की परिसीमायें –

यह अध्ययन हरियाणा राज्य के तीन विश्वविद्यालय केवल कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरूक्षेत्र, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, महर्षि मारकन्डेषवर विश्वविद्यालय, मुलाना तक सीमित रखा जायेगा।

जनसंख्या –

हरियाणा राज्य के तीन विश्वविद्यालयों में से छात्रों को जनसंख्या के रूप में लिया जाएगा।

न्यादश – न्यादर्श किसी भी अनुसंधान की आधारशिला है। यह जितनी सुदृढ़ होगी अनुसंधान के परिणाम उतने ही विश्वसनीय तथा परिशुद्ध होगें। न्यादर्श समष्टि का वह अंश होता है जिसमें समष्टि के अध्ययन हेतु समस्त विशेषताओं का स्पष्ट प्रतिनिधित्व दिखाई देता है। न्यादर्श चयन से अनुसंधानकर्ता के समय व शक्ति की बचत होती है तथा व्यापक क्षेत्र की समस्या का अध्ययन सम्भव हो पाया है। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने हरियाणा राज्य के तीन विश्वविद्यालयों के 150 छात्रों का चयन यादृच्छिकी विधि से किया है।प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा आंकड़ो के संकलन करने हेतु स्वयं निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया जायेगा।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय पद्धतियाँ –

आंकड़ो के विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय पद्धतियों का विशेष महत्व है। अतः अध्ययन में उचित सांख्यिकीय विधि का प्रयोग किया जायेगा।

अध्ययन में प्रयुक्त प्रश्नावली :–

प्रस्तुत अध्ययन में बन्द प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। जिसमें हरियाणा राज्य के विश्वविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक कार्यों में भूमिका से सम्बन्धित अध्ययन व विवेचना करने के लिए स्वयं निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। बन्द प्रश्नावली में उत्तरदाता के लिए भी उत्तर देना सरल होता है और इसके अतिरिक्त प्रश्नों के उत्तर का अंकन एवं सारणीयन करना भी सरल होता है। इसी कारण इस प्रकार की प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय पद्धतियाँ –

आंकड़ो के विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय पद्धतियों का विशेष महत्व है। अतः अध्ययन में निम्न प्रकार की सांख्यिकीय पद्धति का प्रयोग किया गया है।

i) **माध्य (Mean) :-**

सरकारी एवं स्वयं वितपोषीय महाविद्यालयों के विद्यार्थियों का राजनीति के प्रति दृष्टिकोण को जानने के लिए प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्तांको का माध्य ज्ञात किया गया। माध्य समको के सेट का सारे मूल्यों के योग को मूल्यों की कुल संख्या से भाग देकर प्राप्त किया जाता है।

ii) **मानक विचलन (Standrad Deviation)**

विद्यार्थियों के प्राप्तांको का उनके औसत मान से विचलन देखने के लिए मानक विचलन निकाला गया है। मानक विचलन को औसत विचलन का वर्गमूल भी कहा जाता है। यह वितरण के औसत से सब विचलनों के वर्गो के वर्गमूल का औसत है।

iii) t test

दो समूहों की तुलना करने के लिए T-Test लगाया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त आंकड़ों का विश्लेषण :–

प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधानकर्त्ता ने विश्वविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों का सामाजिक व राजनीति कार्यों में भूमिका का अध्ययन एवं विवेचन करने का प्रयास किया गया। जिसमें विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर निष्कर्ष निकालने हेतु आंकड़ो का उपयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियों के माध्यम से विश्लेषण किया गया जो अध्ययन के उद्देश्यों अनुसार सारणी और विश्लेषण में अभिव्यक्त है जिनका अवलोकन नीचे की सारणियों से किया जा सकता है –

हरियाणा राज्य के विश्वविद्यालय स्तर के छात्र व छात्राओं का सामाजिक कार्यों में भूमिका का अध्ययन

क्षेत्र	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	't' मन	Df	परिणाम
सामाजिक छात्र	75	23.69	3.671	0.899	1.98	सार्थक अन्तर नहीं है।
सामाजिक छात्राऐं	75	23.146	3.731			

सारणी में हरियाणा राज्य के विश्वविद्यालय स्तर के छात्र व छात्राओं के सामाजिक कार्यो में भूमिका के तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया कि सामाजिक क्षेत्र में छात्रों द्वारा प्राप्तांकों का मध्यमान 23.69 है । उनका प्रमाणिक विचलन 3.671 है तथा छात्राओं के सामाजिक कार्यो में भूमिका के प्राप्तांकों का मध्यमान 23.146 है तथा प्रमाणिक विचलन 3.731 है। उनका 't' मान 0.899 है जो कि सारणी मान 1.98 से बहुत कम है।

अतः अध्ययनकर्ता पूर्ण विश्वास के साथ इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि अतः शून्य परिकल्पना स्वीकार करते हुए दोनों समूहों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। है जो कि 't' मान से सिद्ध होता है।

अध्ययन के परिणाम :–

1. हरियाणा राज्य के विश्वविद्यालय स्तर के छात्रों का सामाजिक कार्यों में भूमिका के अध्ययन में पाया गया कि 75 छात्रों द्वारा प्राप्तांको का मध्यमान 23.69 है तथा उनके द्वारा प्राप्त प्राप्तांको का प्रमाणिक विचलन 3.671 है।
2. हरियाणा राज्य के विश्वविद्यालय स्तर की छात्राओं का सामाजिक कार्यों में भूमिका के अध्ययन में पाया गया कि 75 छात्राओं द्वारा प्राप्त प्राप्तांको का मध्यमान 23.146 है तथा उनके द्वारा प्राप्त प्राप्तांको का प्रमाणिक विचलन 3.731 है।
3. हरियाणा राज्य के विश्वविद्यालय स्तर के छात्र व छात्राओं के सामाजिक कार्यो में भूमिका के तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया कि सामाजिक क्षेत्र में छात्रों द्वारा प्राप्तांकों का मध्यमान 23.69 है उनका प्रमाणिक विचलन 3.671 है तथा छात्राओं के सामाजिक कार्यो में भूमिका के प्राप्तांकों का मध्यमान 23.146 है तथा प्रमाणिक विचलन 3.731 है। उनका 't' मान 0.899 है जो कि सारणी मान 1.98 से बहुत कम है।

निष्कर्ष :–

निष्कर्ष में यह भी पाया गया कि विश्वविद्यालय स्तर के छात्रों की सामाजिक कार्यो में भूमिका सामान्य स्तर की है। निष्कर्ष में यह भी पाया गया कि सामाजिक कार्यो में छात्रों की भूमिका सामान्य स्तर की है तथा उन्हें आज के समय की आवश्यकता को देखते हुए और अधिक जागरूकता की आवश्यकता है। सामाजिक कार्यो में छात्राओं की भूमिका अच्छी पाई गई जो कि सामान्य स्तर की है। छात्र व छात्राओं के सामाजिक कार्यो की तुलनात्मक भूमिका में पाया गया कि दोनों समूहों के सामाजिक कार्यो में भूमिका में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। ये निष्कर्ष व परिणाम विश्वविद्यालय स्तर पर आधुनिकरण को दर्षाते है आकड़ों द्वारा दोनों समूहो में कोई सार्थक अन्तर न पाये जाने का कारण है कि आज के समय में लड़के व लड़कियों में कोई अन्तर नहीं है। आज के समय में लड़के जो कार्य कर सकते हैं वहीं कार्य लड़कियों द्वारा भी सम्भव है। शिक्षा, सामाजिक किसी भी क्षेत्र में लड़कियों लड़कों की तुलना में कम नहीं है।

हर क्षेत्र में उनकी भागीदारी कम नही रही है। जो लड़कियां उच्च स्तर की शिक्षा में जाती है। वह पुरूषों के समान राजनैतिक कार्यो में भूमिका निभाती है। भारतीय स्वीधान के द्वारा भी शिष्यों की भागीदारी बराबर की मानी गई है। परन्तु छात्र व छात्राओं दोनों समर्द्ध की सामाजिक भागीदारी सामान्य स्तर की पाई गई इसलिए उन्हें और ज्यादा प्रेरणा व उत्साह के साथ समाज में अपनी भूमिका को सिद्ध करना होगा। इसके लिए उनके अभिभावकों व अध्यापको को महत्वपूर्ण कदम उठाने की आवश्यकता है।

शैक्षिक निहितार्थ :–

1. यह अध्ययन उच्च स्तरीय या विश्वविद्यालय स्तर छात्रों के सामाजिक कार्यो में भूमिका व रूझान जानने के लिए उपयोगी है।
2. यह अध्ययन माध्यमिक स्तर छात्राओं के सामाजिक कार्यो में भूमिका जानने के लिए उपयोगी है।
3. यह अध्ययन शिक्षकों के सामाजिक कार्यो में भूमिका जानने के लिए उपयोगी है।
4. इस अध्ययन के द्वारा अभिभावकों व अध्यापक गण का छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रेरित करता है।
5. इस प्रकार के अध्यापकों की सहायता से छात्रों की सामाजिक कार्यो में भूमिका को बढ़ाया जा सकता है।
6. यह अध्ययन आरोही, व केन्द्रीय विद्यालयों के अध्यापकों व छात्रों के लिए उनकी सामजिक जागरूकता को जानने के लिए उपयोगी है।
7. यह अध्ययन शिक्षण परीक्षण अध्यापकों की सामाजिक कार्यो में भूमिका जानने के लिए उपयोगी है।

अध्ययन के लिए सुझाव –

प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र सीमित है। अध्ययनकर्ता द्वारा विश्वविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों का सामाजिक कार्यों में भूमिका का अध्ययन एवं विवेचन किया गया। भविष्य में शोधकर्ताओं द्वारा इस प्रकार के अन्य अध्ययन निम्नलिखित रूप से किये जा सकते है–

1. बी0एड0 कालेजों में सामाजिक प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
2. दूसरे राज्यों में भी सामाजिक प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
3. सामाजिक प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन अध्यापकों पर भी किया जा सकता है।
4. सामाजिक प्रभाव का अध्ययन अतिथि अध्यापकों पर भी दिया जा सकता है।
5. सामाजिक का प्रभाव अन्य कोर्स जे0बी0टी0, एम0एड0 आदि कोर्सों में भी किया जा सकता है।
6. सामाजिक प्रभाव का अध्ययन आई0टी0टी0, पॉलटेक्निकल कोर्सो के विद्यार्थियों पर किया जा सकता है।
7. इस अध्ययन को आरोही व केन्द्रीय विद्यालयों के अध्यापकों की सामाजिक कार्यों में भूमिका जानने के लिए किया जा सकता है।
8. इस अध्ययन को आरोही व केन्द्रीय विद्यालयों के छात्र व छात्राओं की सामाजिक कार्यों में भूमिका जानने के लिए किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- पाठक पी.डी. (2011) ''भारतीय शिक्षा और संरचनाऐं'' आगरा : श्री विनोद पुस्तक मंदिर।
- कौल लोकेश (2005) शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिकेशन।
- बेस्ट, जे. डब्लयू (1963) रिसर्च इन एजूकेशनल, मुम्बई प्रिंटिग हॉल ऑफ इण्डिया प्र.लि.।
- भारतीय आधुनिक शिक्षा, त्रैमासिक वर्ष 25, संयुक्तांक 1–2, 2006
- भारद्वाज विनोद, कलाऐं आस–पास दिल्ली, ललित कला अकादमी।
- डॉल्फिन्ज, रिक, ट्यून, लरिस, वेनडेर (1 जनवरी 2013) न्यू मैंटरालिज्म इन्टरव्यूज एण्ड कैटोग्रफीज। ओपन ह्यूमनिटि प्रेस ISBN 9781607852810।
- डॉ शर्मा रितु (2016) समकालीन भारत में शिक्षा, राखी प्रकाशन प्रा.लि।
- सी.ब्रैड्रोटीस सीवी ऑन हर बेवसाइट